शरद जोशी

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्रीमती अनुपमा दिवाकर भोरे का एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध "शरद जोशी के व्यंग्य नाटक" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

प्रा.जे.आर.जाधव
हिंदी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

Lal Bahadur Shastri College - Satara

अध्यक्ष
हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर - 416 004

डॉ.गजानन शंकर सुर्वे
एम.ए.पीएच.डी.
पूर्व रीडर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा – 415 002 (महाराष्ट्र)

एम.के.होटल बिल्डिंग
कवड़े नगर,
नयी सांगवी,
पुणे – 411 027
(महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं, डॉ.गजानन शंकर सुर्वे, पूर्व रीडर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती अनुपमा दिवाकर भोरे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध "शरद जोशी के व्यंग्य नाटक" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है।

मैं, यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध कला–विद्या–शाखा के अन्तर्गत हिंदी विषय से संबंधित नाटक विधा में सन्निविष्ट है।

पुणे
दिनांक 27.6.1998

(डॉ.गजानन शंकर सुर्वे)
शोध–निर्देशक के हस्ताक्षर

प्रख्यापन

शरद जोशी के व्यंग्य नाटक

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल.हिंदी के लघु-शोध-प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय. कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

Anu D. Bhore

सातारा

श्रीमती अनुपमा दिवाकर भोरे

दिनांक 27th June 1998

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

शरद जोशी के व्यंग्य नाटक

प्राक्कथन

मानव और साहित्य का घनिष्ठ, अन्योन्य तथा अगाध संबंध हैं। साहित्य का सृष्टा साहित्यकार है। साहित्यकार अपने जीवन काल में जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है, उसको ही अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है। इस दृष्टि से साहित्य समाज का दर्पण है। लेकिन साहित्यकार केवल समाज का चित्र प्रस्तुत नहीं करता है बल्कि उसमें समाज सुधार की गुंजाइश भी रहती है। मानव समाज कितना ही बुध्दिजीवी और व्यंग्यनिष्ठ क्यों न हो, उसमें कुछ मात्रा में दोष, न्यूनताएँ और विसंगतियाँ भी अनुस्यूत होती हैं। इन सबका खयाल रखकर व्यंग्य साहित्यकार अपने साहित्य में व्यंग्य की निर्मिति कर पाठकों को हँसाता भी है और रूलाता भी है। शरद जोशी एक ऐसे व्यंग्यकार हैं कि जिन्होंने अपने जीवन काल में जो कुछ अनुभव किया है और समाज को देखा है उसका ही चित्र उन्होंने व्यंग्य के रूप में पाठकों के सम्मुख रखा है। उनका व्यंग्यसाहित्य विपुल है।

शरद जोशी ने बाल्यकाल से ही लेखन आरंभ किया था। "नई दुनिया", "परिक्रमा" में उन्होंने स्तंभ लिखना प्रारंभ किया था। "ज्ञानोदय", "रानी", "माधुरी" आदि विभिन्न पत्रिकाओं में कहानियाँ एवं व्यंग्य–लेखन किया। उनकी साहित्य साधना में उनकी पत्नी इरफाना का भी कुछ सहयोग रहा है। उन्होंने एक साथ "धर्मयुग", "नवभारत टाइम्स", "सारिका", "साप्ताहिक हिंदुस्तान","रविवार" आदि पत्र–पत्रिकाओं में काफी व्यंग्य–लेख लिखे। फिल्म लेखन और दूरदर्शन धारावाहिक के साथ कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ भी लिखे हैं। उनके प्रतिनिधि व्यंग्य ग्रंथों में "तिलस्म", "जीप पर सवार इल्लियाँ", "रहा किनारे बैठ", "मुद्रिका–रहस्य" इत्यादि उल्लेखनीय हैं। "मुद्रिका–रहस्य" उनके मरणोपरान्त प्रकाशित व्यंग्य निबंध संग्रह है।

शरद जोशी ने केवल दो ही व्यंग्य नाटक लिखे हैं। लेकिन उनमें सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य के चित्र प्रचुर मात्रा में नजर आते हैं। हिंदी के व्यंग्य नाटककारों के नाटकों में शरद जोशी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" महत्वपूर्ण व्यंग्य नाटक है, साठोत्तर हिंदी व्यंग्य नाटकों को अमूल्य निधि हैं। अतः उनके दो व्यंग्य नाटक ही अनुसंधान का विषय बना गए हैं।

महाविद्यालयी जीवन में मुझे व्यंग्य चित्र खींचने की रूचि थी। इसी कारण मैंने शरद जोशी के व्यंग्य नाटक पर एम्.फिल. के लिए लघु शोध प्रबंध लिखने का तय किया है। शरद जोशी के साहित्यपर विशेषतः उनके व्यंग्य नाटकों पर अभी तक हिंदी में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। अतः उनके दो व्यंग्य नाटकों का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध–प्रबंध का मुख्य प्रतिपाद्य है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध छह अध्यायों में विभाजित है :–

अध्याय : 1 – प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "व्यंग्य–विवेचन" है, जिसमें व्यंग्य : शब्दप्रयोग और अर्थबोध, व्यंग्य की परिभाषा, व्यंग्य का स्वरूप, व्यंग्य और व्यंग्य विधा, व्यंग्य–प्रेरणा, व्यंग्य की भाषा, भावाभिव्यक्ति का माध्यम : व्यंग्य, हिंदी व्यंग्य की भाषा, व्यंग्य का चरित्र, हास्य और व्यंग्य, व्यंग्य–दायित्व, व्यंग्य का भविष्य आदि पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय : 2 – प्रस्तुत अध्याय "शरद जोशी : जीवन वृत्त : व्यक्तित्व और साहित्य–संपदा" नाम से अभिहित है, जिसके अन्तर्गत शरद जोशी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी दी गयी है। जीवनवृत्त – जन्म – माता – पिता आदि, बचपन, शिक्षा, नौकरियाँ, परिवार। विवाह, मित्र परिवार, संघर्षपूर्ण जोवन, व्यक्तित्व : वेषभूषा, स्वभाव, रहन–सहन, शौक। रूचि, साहित्य–साधना, व्यंग्यधर्मिता, साहित्य–संपदा : लेखन, संपादन, फिल्म लेखन, दूरदर्शन धारावाहिक, कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ : "तिलस्म", "जीप पर सवार इल्लियाँ", "रहा किनारे बैठ", "मुद्रिका- रहस्य", "व्यंग्य नाटक : "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ", "अंधों का हाथी" आलोचकों की निगाहों में शरद जी, पुरस्कार–सम्मान, निधन, इसका विवेचन किया है।

अध्याय : 3 – प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "**शरद जोशी के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य**" है। इसमें आत्मस्तुति का शिकार नवाब, कर्तव्य विमूढ़ नवाब, नवाब की अनभिज्ञता, नवाब का नाटक विषयक अज्ञान, नवाब ही भगवान है, नवाब की मनमानी, नवाब द्वार जनता को उल्लू बनाना, सत्ता का दुरूपयोग, झूठी कस्मे – झूठे वादे, झूठा फर्ज, झूठी शान, झूठी इज्जत का पर्दाफाश, वाह रे स्मारक, वाह री इज्जत, कर्तव्य से विमुखता, अधिकार का दुरूपयोग, रक्षक ही भक्षक है, रिश्वतखोरी, शिकायती राज, चिंतकों पर व्यंग्य. दबाव तंत्र, नवाब की चापलूसी, सिफारिश का तरीका, अंधी राजनीति, कार्यालय में अंधी राजनीति, राजनीतिक दलों की स्वार्थांधता, अंधा भ्रष्टाचार, अंधा नेतृत्व, अंधी सहानुभूति, अंधी उपेक्षा, सूत्रधार की अंधी हत्या आदि पर प्रकाश डाला है।

अध्याय : 4 – प्रस्तुत अध्याय को "**शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक व्यंग्य**" संज्ञा दी गई हैं। इसमें सामाजिक स्तर, नवाब का खानदान, नवाब की दानवीरता, चिंतकों का समाज, कलाकारों की उपेक्षा, नाटक के प्रति वितृष्णा, रंगमंच की बूरी हालत, नाटक के नियम, परंपरा का पर्दाफाश, अलादाद खाँ गधा या मानव, मानव से पशु बेहतर, पुरूषनीति, पुरूषों की नारी पर निगाहें, कार्यलय एक रोमान्स स्थल, सुखी प्रजा ?, परेशान जनता, उपेक्षित अनपढ़, भारत में भिखारी, समाज की स्वार्थांधता, रोटी का सवाल, गरीबी हटाओ, धूम्रपान, परिवार नियोजन, इज्जत का सवाल, मित्रता की अजीब रीति, सरकारी मुआवजा, अंधा आशावाद, अंधी प्रामाणिकता, अंधा फर्ज, नेताओं की ऊपरी सहानुभूति, समर्पण की व्याख्या, शवयात्रा, सामाजिक दायित्व से पलायन आदि को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय : 5 – प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "**शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्व**" किया गया है। इसके अन्तर्गत **शिल्पतत्व : संवाद तत्व** – उलजलूल संवाद, पात्र–समूह संवाद, शब्द–युग्म, संवाद संवाद में संवाद, छोटे संवाद, बड़े संवाद, पुनरूक्तिपरक संवाद, **भाषा तत्व** – दरबारी भाषा, गालीगलौच भाषा, तार्किक भाषा, कैफियत की भाषा, आकाशवाणी भाषा, जनमत, सरकारी पत्र भाषा, तार की भाषा, **शब्द तत्व** – अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्रशासनिक शब्दावली, मुहावरे–कहावतें, **प्रतीक विधान, बिंब**

विधान, शैली तत्व : आत्मकथन शैली, इतिवृत्तात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, सूक्ति शैली, गणितीय भाषा शैली, विस्मयादिबोधक शैली, संबोधन शैली, प्रश्नार्थक शैली, श्रध्दांजली, **गीतरचना** : कोरस गीत, गीत, मंचीय तत्व : दृश्यविधान – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – नवाब का बाजार में आगमन, कोतवाल और रामकली का रोमान्स, चिंतकों का "समय" पर चिंतन, नवाब का आश्वासन और चिंतकों का नोट करना, चिंतक – 3 की हत्या, नवाब का क्रोध और रामकली का नृत्य, अलादाद खाँ – गधा या आदमी ?, अलादाद खाँ की हत्या और शवयात्रा, "**अंधों का हाथी**– – सूत्रधार का प्राक्कथन, हिंदी रंगमंच की हालत, हाथी के प्रति उत्सुकता, हाथी की समस्या, मंच पर हाथी ?... नहीं, हाथी हटाओ आंदोलन, हाथी संबंधी विभिन्न तरीके, सूत्रधार की मौत और पुनः उपस्थिति, **प्रकाश योजना, ध्वनि और संगीत, दर्शकीय–पाठकीय संवेदनाए** आदि का विवेचन किया गया है।

अध्याय : 6 – प्रस्तुत अध्याय "**समापन**" शीर्षक से अभिहित है। इस अध्याय में शोध–प्रबंध का सार तथा विशेष विवेच्य नाटकों का मूल्यांकन किया गया है।

कृतज्ञता–ज्ञापन

प्रस्तुत शोध–प्रबंध श्रध्देय गुरुवर डॉ.गजानन शंकर सुर्वे, पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के आत्मीय निर्देशन में लिखा है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद शोध–प्रबंध के विषय–चयन से लेकर संपूर्ति तक उन्होंने जिस आत्मीयता, तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन, किया है, उसके प्रति शब्दों के माध्यम से कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है। फिर भी इतना अवश्य है कि शोध–प्रबंध की पूर्ति का सारा श्रेय उन्हीं के आशीर्वचन और मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। उन्होंने अपने निजी समृध्द ग्रंथालय से समय समय पर मुझे नाटक, संदर्भ ग्रंथ तथा कोश ग्रंथादि अध्ययन के लिए देकर उपकृत किया है। अतः उनके सामने श्रध्दाभाव से विनम्र होकर नतमस्तक होने में ही मैं गर्व का अनुभव करती हूँ।

प्रस्तुत शोध–कार्य में गुरुपत्नी श्रीमती देवलता सुर्वे मौसी का मैं विशेष आभार मानती हूँ जिन्होंने मेरी माँ समान मेरा खयाल रखा, गुरुकन्या कामायनी सुर्वे ने भी छोटे–मोटे कार्यों में समय समय पर मेरी सहायता की है, उसके लिए मैं शुक्रगुजार हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के पूर्व प्राचार्य पुरूषोत्तम सेठ और प्राचार्य आर.ए.कदम के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.पी.एस्.पाटील, डॉ.अर्जुन चव्हाण की सहायक के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। प्रा.जे.आर.जाधव, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के प्रति मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे अपने निजी ग्रंथालय से कुछ किताबें पढ़ने को दी और मुझे प्रेरणा दी।

प्रा.रूकसाना पठाण ने भी मुझे इस शोध–कार्य में प्रेरणा दी इसलिए मैं उनका भी आभार मानती हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथालय अध्यक्ष श्री.जगताप और सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरी स्वर्गस्थ दादी काशीबाई ने मुझे अधिक पढ़ाई के लिए जिद निर्माण की। अतः इनकी स्मृति में श्रध्दाभाव से विनम्र होकर नतमस्तक होने में ही मैं गर्व का अनुभव करती हूँ।

मेरे पिताजी श्री.दिवाकर भोरे और माता सौ.सुधा भोरे की प्रेरणा और आशीर्वचन प्रस्तुत शोध–कार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए हैं। मेरे बड़े भाई अतुल भोरे और मेरी प्यारी भाभी अपर्णा की भी मैं बहुत आभारी हूँ। इन दोनों ने भी बहुत मदद की है। मेरी बड़ी बहन सुषम पॉल और मेरे जीजाजी अनिल पॉल ने भी बहुत मदद की है। मेरी बहन सीमा दीदी ने तो मुझे इस शोध–प्रबंध कार्य में अच्छी तरह से पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरणा दी, इसलिए में उसके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। इनके अलावा मेरे मौसेरे भाई प्रमोद और राजेश काका के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। मेरे इस शोध–कर्य में ये सभी बराबरी के हिस्सेदार हैं। अतः इनकी हार्दिक अनुकम्पा के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

इसके अतिरिक्त मेरे सभी रिश्तेदार, मेरी सहेलियाँ और शुभचिंतकों का मैं आभार मानती हूँ जो इस शोध–कार्य में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहायक साबित हुए हैं। प्रबन्ध लेखन के लिए जिन उपजीव्य ग्रंथों, नाटकों, संदर्भ ग्रंथों का मैंने उपयोग किया उन सभी लेखकों के प्रति मैं हृदयस से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध का टंकलेखन करनेवाले **मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टाईल, सातारा** के श्री. मुकुन्द ढवले और उनके सहायक श्री. राजू कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगी।

Anu D. Bhore

श्रीमती अनुपमा दिवाकर भोरे

696–97, शनिवार पेठ,

सातारा – 415 002

(महाराष्ट्र)

"शरद जोशी के व्यंग्य नाटक"

		पृष्ठांक
अध्याय : 1	– व्यंग्य–विवेचन	1 – 25
अध्याय : 2	– शरद जोशी : जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और साहित्य संपदा	26 – 53
अध्याय : 3	– शरद जोशी के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य	54 – 85
अध्याय : 4	– शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक व्यंग्य	86 – 119
अध्याय : 5	– शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्व	120–162
अध्याय : 6	समापन	163–167
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	168–170

अनुक्रमणिका

अध्याय – 1

व्यंग्य – विवेचन 1 - 25

भूमिका

व्यंग्य : शब्द प्रयोग और अर्थबोध

व्यंग्य की परिभाषा

व्यंग्य का स्वरूप

व्यंग्य और व्यंग्य विधा

व्यंग्य – प्रेरणा

व्यंग्य की भाषा

भावाभिव्यक्ति का माध्यम : व्यंग्य

हिंदी व्यंग्य की भाषा

व्यंग्य का चरित्र

हास्य और व्यंग्य

व्यंग्य दायित्व

व्यंग्य का उद्देश्य / प्रयोजन

व्यंग्य का महत्व

व्यंग्य की सीमाएँ

व्यंग्य का भविष्य

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय – 2

शरद जोशी : जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और साहित्य-संपदा 26 – 53

भूमिका

जीवनवृत्त

जन्म–माता–पिता आदि

बचपन

शिक्षा

नौकरियाँ

परिवार / विवाह

मित्र परिवार

संघर्षपूर्ण जीवन

व्यक्तित्व

वेशभूषा

स्वभाव

रहन–सहन

शौक / रूचि

साहित्य–साधना

व्यंग्यधर्मिता

साहित्य–संपदा

लेखन

संपादन

फिल्मलेखन

दूरदर्शन धारावाहिक

कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ – (1) तिलस्म (2) जीव पर सवार इल्लियाँ
(3) रहा किनारे बैठ, (4) मुद्रिका–रहस्य

व्यंग्यनाटक :– (1) एक था गधा उर्फ़ अलादाद खाँ
(2) अन्धों का हाथी

आलोचकों की निगाहों में शरदजी

पुरस्कार–सम्मान

निधन

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय – 3

शरद जोशी के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य 54 – 85

भूमिका

आत्मस्तुति का शिकार नवाब

कर्तव्य विमुढ नवाब

नवाब की अनभिज्ञता

नवाब का नाटक विषयक अज्ञान

नवाब ही भगवान है

नवाब की मनमानी

तस्वीर ढोना

नवाब द्‌वारा जनता को उल्लू बनाना

सत्ता का दुरूपयोग

झूठी कस्में, झूठे वादे

झूठा फर्ज, झूठी शान

झूठी इज्जत का पर्दाफाश

वाह रे स्मारक, वाह री इज्जत

कर्तव्य से विमुखता

अधिकार का दुरूपयोग

रक्षक ही भक्षक है

रिश्वतखोरी

शिकायती राज

चिन्तकों पर व्यंग्य

दबाव तंत्र

नवाब की चापलूसी

सिफारिश का तरीका

अंधी राजनीति

कार्यालय में अंधी राजनीति

राजनीतिक दलों को स्वार्थांधता

अंधा भ्रष्टाचार

अंधा नेतृत्व

अंधी सहानुभूति

अंत्री उपेक्षा

सूत्रधार की अंधी हत्या

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय – 4

शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक व्यंग्य 86 – 119

भूमिका

सामाजिक स्तर, नवाब का खानदान, नवाब की दानवीरता, चिंतकों का समाज, कलाकारों की उपेक्षा

नाटक के प्रति वितृष्णा, रंगमंच की बूरी हालत, नाटक के नियम परंपरा का पर्दाफाश

अलादाद खाँ गधा या मानव, मानव से पशू बेहतर, पुरुषनीति, पुरुषों की नारी पर निगाहें, कार्यालय एक रोमान्स स्थल

सुखी प्रजा, परेशान जनता, उपेक्षित अनपढ़, भारत में भिखारी, समाज की स्वार्थांधता

रोटी का सवाल, गरीबी हटाओ, धूम्रपान, परिवार नियोजन, इज्जत का सवाल, मित्रता की अजीब रीति

सरकारी मुआवजा, अंधा आशवाद, अंधी प्रामाणिकता, अंधा फर्ज, नेताओं की ऊपरी सहानुभूति, समर्पण की व्याख्या, शवयात्रा, सामाजिक दायित्व से पलायन

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय – 5

शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्व 120–162

भूमिका

शिल्पतत्व

संवाद तत्व – उलजलूल संवाद, पात्र–समूह संवाद, शब्द–युग्म संवाद, संवाद में संवाद, छोटे संवाद, बड़े संवाद, पुनरूक्तिपरक संवाद

भाषा तत्व – दरबारी भाषा, गालीगलौच भाषा, तार्किक भाषा, कैफियत की भाषा, आकाशवाणी भाषा, जनमत, सरकारी पत्र भाषा, तार की भाषा

शब्द तत्व – अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्रशासनिक शब्दावली, मुहावरे कहावतें

प्रतीक विधान

बिंब विधान

शैली तत्व – आत्मकथन शैली, इतिवृत्तात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, सूक्ति शैली, गणितीय भाषा शैली, विस्मयाधिबोधक शैली, संबोधन शैली, प्रश्नार्थक शैली, श्रध्दांजली

गीत रचना – कोरस गीत, गीत

मंचीय तत्व– दृश्य विधान – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ", "अंधों का हाथी"

अभिनेयता – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ"

नवाब का बाजार में आगमन

कोतवाल और रामकली का रोमान्स

चिंतकों का "समय" पर चिंतन

नवाब का आश्वासन और चिंतकों का नोट करना

चिंतक – 3 की हत्या

नवाब का क्रोध और रामकली का नृत्य

अलादाद खाँ :गधा या आदमी ?

अलादाद खाँ की हत्या और शवयात्रा

अंधों का हाथी

सूत्रधार का प्राक्कथन

हिंदी रंगमंच की हालत

हाथी के प्रति उत्सुकता

हाथी की समस्या

मंच पर हाथी ? .... नहीं

हाथी हटाओं आंदोलन

हाथी संबंधी विभिन्न तरीके

सूत्रधार की मौत और पुनः उपस्थिति

प्रकाश योजना

ध्वनि और संगीत

दर्शकीय, पाठकीय संवेदनाएँ

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय – 6

समापन 163-167

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 168-170